International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 30-32

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 30-32
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-09-2020
Accepted: 27-10-2020

आसुतोष कुशवाहा
[1] शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
आसुतोष कुशवाहा
[1] शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

श्री रामचन्द्रसूरि कृत नलविलास नाटक में दमयन्ती चरित

आसुतोष कुशवाहा

प्रस्तावना

श्री रामचन्द्रसूरि कृत नलविलास सात अंको का ऽृंगार प्रधान कथावस्तु पर आधारित है। नाटक है। इस नाटक का नायक नल और नायिका दमयन्ती है। महाभारत के वन पर्व की कथा को ग्रहण करके श्री रामचन्द्रसूरि ने नाट्यशास्त्रीय नियमों के कारण कुछ परिवर्तन, के साथ कथा को निबद्ध किया है। प्रस्तुत नाटक की नायिका दमयन्ती विदर्भदेश के राजा भीमरथ की पुत्री है। नायक के ही गुण नायिका में भी होने चाहिए, क्योंकि नाटक का फल नायिका को भी प्राप्त होता है। दशरूपकार धन०जय ने लिखा है–

नेता विनीतो मुधरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा।।
बुद्धयुत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः।
शूरो दृढ़श्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः।। [1]

अर्थात् नेता विनम्र, मधुर, त्यागी, दक्ष, मृदुभाषी, लोकप्रिय, पवित्र, वाक्पटु, प्रसिद्ध वंश वाला, स्थिर, युवा, बुद्धि–उत्साह–स्मृति–प्रज्ञा, कला तथा मान से युक्त, शूर, दृढ़ तेजस्वी, शास्त्रज्ञ एवं धार्मिक होता है। इसी प्रकार से नायिका दमयन्ती में भी ये सामान्यतः गुण मिलते हैं। नाट्यशास्त्र की दृष्टि से दमयन्ती उत्तम प्रकृति की नायिका है। धन०जय ने दशरूपक में नायिका के तीन भेद किये है– 1– स्वकीया, 2– परकीया, 3– साधारण स्त्री।

स्वान्या साधारणस्त्रीति तद्गुणा नायिका त्रिधा। [2]

स्वकीया नायिका शील तथा सरलता आदि गुणों से युक्त मुग्धा, मध्या प्रगल्भा भेद से तीन प्रकार की होती है।

मुग्धा मध्या प्रगल्भेति स्वीया शीलार्जवादियुक्।। [3]

यहाँ शील से अभिप्राय अच्छे आचरण से है। अतएव स्वकीया नायिका पतिव्रता, अकुटिल, लज्जावान्, पति की सेवा में निपुण हुआ करती है। प्रस्तुत नाटक की नायिका दमयन्ती का अच्छा आचरण है। दमयन्ती पतिव्रता स्त्री है। पति नल द्वारा वन में परित्याग कर दिये जाने पर पिंगलक के कथन–उस पति से क्या जिसके द्वारा तुम छोड़ दी गई हो? दमयन्ती प्रत्युत्तर देती है कि प्रथम दर्शन में ही आत्मा को उन्हें सौंपकर तथा इस वन में साथ चलती हुई यद्यपि में छोड़ दी गई हूँ, फिर भी मैं स्वप्न में भी दूसरे पति की इच्छा नहीं करती हूँ। [4]

आत्मा समर्पितः प्रथमदर्शने वनमिंद च सह चलिता।
स्वप्नेऽपि पतिमन्यं न का⌑क्षामि तथापि परित्यक्ता।। [5]

दमयन्ती अकुटिल एवं लज्जावान् है। तृतीय अंक में नल से मिलने सहकारविथि में गई हुई दमयन्ती मकरिका से कहती है कि मैं कन्या के आचरण के विपरीत आचरण करने का साहस नहीं कर सकती और दूसरे यह कि अपरिचित प्रेमी जन का अनुगमन करती हुई मैं कपि०जला से लजाती भी हूँ।

मकरिके! नाहमीदृशं कन्याजनस्यानुचितमनुष्ठातुं साहसिनी। अन्यच्च, असदृशस्नेहं जनं स्वयमनुसरन्ती कपि०जलाया अपि लज्जे। [6]

दशरूपककार धन०जय ने मुग्धा नायिका के लक्षण में लिखते हैं कि मुग्धा नववयः कामा रतौ वामा मृदुः क्रुधि। [7]
दमयन्ती मुग्धा नायिका है वह रति के गूढवचनों, हाव–भाव युक्त अर्थ को समझने में अप्रवीण हूँ ऐसा कलहंस से कहती है।

कलहंसः – मुग्धा खल्वहम्, न गूढभणितीनामर्थं जानामि। [8]

दमयन्ती अपने प्रेम या रति को नल के प्रति सहकारवीथि से जाते हुए विदूषक को पत्र देकर प्रकट करती है।

सौदामिनीपरिष्व□ मु०चन्त्यपि पयोमुचः।
न तु सौदामिनी तेषामभिष्व□ विमु०चति।। [9]

इस प्रकार से प्रकृत नाटक की नायिका दमयन्ती स्वकीया मुग्धा नायिका के अन्तर्गत आती है।
नायिका दमयन्ती अनुपम सुन्दरी है। राजा नल विदर्भदेश से लम्बोदर के द्वारा आयी हुई प्रतिकृति के देखकर दमयन्ती पर आसक्त हो जाते है और उसके रूप सौन्दर्य के वर्णन में विभिन्न उपमानों का प्रयोग करते हैं कि मुख में चन्द्र ने दोनों आखों में पीले–लाल वर्ण के दो कमल ने, नासिका में कमलनाल ने, दाँतों के निवास स्थल में खिले हुए बन्दूक–फूलों ने, गले में शंख ने, स्तनद्वय में दो स्वर्ण कलशों ने, दोनों नितम्बों में ग□ा की धारा को रोकने वाले दो तटो ने तथा इसके दोनों पैरों में कमल ने अपना रहने का घर बनाया हैं। [10]

वक्त्रं चन्द्रो नयनयुगली पाटलाम्भोजयुग्मं
नासानालं दशनवसनं फुल्लबन्धूकपुष्पम्।
कण्ठः कम्बुः कचयुगमथो हेमकुम्भो नितम्बौ
ग□ारोधश्चरणयुगलं वारिजद्वन्द्वमेतत्।। [11]

दमयन्ती आज्ञाकारिणी नायिका है। वह सहकारवीथि में नल मिलन के समय माता द्वारा बुलाये जाने पर चेटी के वचनों को सुनकर तुरन्त वहाँ से लौट आती है। [12]
दमयन्ती बुद्धिमती नायिका है। वह कलहंस द्वारा लाये हुए नल को चित्र को मन्दिर में रखवा देती है, जिससे पिता भीमरथ के पूछने पर यह किस व्यक्ति का चित्र है उसे कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और नल से विवाह कराने के लिए लम्बस्तनी को उपाय स्वरूप कलहंस से निषध देश ले जाने का परामर्श देती है यह उसकी बुद्धिमता को प्रदर्शित करता है। [13]
दमयन्ती एक धैर्यवान नायिका है, वह नल द्वारा वन में छोड़ दिये जाने पर धैर्य का त्याग न करके वह सार्थवाहों के साथ मिलकर पिता के घर चली आती है और नल की खोज में अयोध्यापति दधिपर्ण के यहाँ कलहंस, मकरिका, विदूषक इत्यादि को नलान्वेषण नाटक का अभियन करने के लिए भेजती है तथा अपने द्वितीय स्वयंवर का निमंत्रण पर दधिपर्ण के पास पहुँचा कर नल को पुनः प्राप्त करने की योजना बनाती है। यह उसके विकट परिस्थितियों में धैर्य का परिचायक है।

सूत्रधारः– नलान्वेषणनामप्रबन्धाभिनयावधानाय महाराजं दधिपर्णमभ्यर्थये। [14]
अनन्तरमार्यपुत्रपरीक्षणार्थं नाटकं कृत्वा कलहंस–खरमुख–मकरिकाः प्रेषिताः। [15]

दमयन्ती अन्धविश्वासनी विचार वाली स्त्री है। नल से मिलकर सहकारवीथि से जाते समय विदूषक के मुख से निकली गर्दभ ध्वनि को अपशकुन समझकर पुनः कुछ क्षण के लिए नल के पास वापस लौट आती है। यह उसके अन्धविश्वास का सूचक है।

कथमेष वृक्षान्तरितः खरो वामं व्याहरति,
हले मदनिके अशुकनं मे। तावद् गच्छ त्वम्।
अहं पुनः सहकारवीथ्यां गत्वाऽऽगामिव्यामि।। [16]

दमयन्ती सदाचार से सम्पन्न उच्चकुलोत्पन्ना कन्या है। जब सहकारविथि में कपि०जला दमयन्ती से नल के प्रति अनुराग प्रकट करने के लिए बोलती है तो वह प्रत्युत्तर देती है कि सखि! तुम कन्या के विपरीत आचरण के लिए उत्साहित कर रही हो।

हले त्वामपि कन्यकाजनविरुद्धकर्मणि माम् नियोजयसि। [17]

दमयन्ती सूक्ष्म निरीक्षण निपुणा स्त्री है वह मन के भावों को समझने में प्रवीण है। तभी तो नल के हाथों को अपने साड़ी में बाँधकर वन में शयन करती है कि कहीं नल मुझे छोड़कर चले जाय।

मा नाम मां प्रसुप्ता परित्यज्य कदाचिद् गच्छेत्
तदात्मनश्चीवेरण आर्यपुत्रं परिवेष्ट्य निद्रामि।। [18]

दमयन्ती हास–परिहास में भी अति निपुण है। सहकारविथि में राजा नल दमयन्ती का हाथ पकड़े हुए है। दमयन्ती छोड़ने के लिए कहती है। नल उसके हाथ को चित्र बनाने के कारण अपराधी बताते हैं तो दमयन्ती नल के वचनों को सुनकर शान्त नहीं रहती है बल्कि प्रत्युत्तर शालीन परिहास पूर्ण वचनों में देती है।

दमयन्ती–यद्येवं तदा मु०य मे पाणिम्।
राजा– कथम् अपराधकारी मु०च्यते?
दमयन्ती– किमेतेनापराद्धम्?
राजा– अनेन त्वत्प्रति कृतिमालिख्यायमियतिविरहानले पातितः।
दमयन्ती (स्मित्वा) – यद्येवं तदाऽहमपि ते पाणिं ग्रहीष्यामि, तवपाणिलिखितेन पटेनाहमप्येतस्थशरीरा जाता। [19]

दमयन्ती संगीत आदि कलाओं से भी प्रेम करती है। तभी तो कामदेव की पूजा के लिए पुण्यचयन हेतु जाते समय कोशलिका से संगीत आरम्भ करने का आदेश देती है।

अहं स्वयमुपचीय कुसुमानि मदनं पूजयिष्यामि।
ततस्तिष्ठतु कौशलिका, प्रवर्तयत तावत् संगीतम्। [20]

निष्कर्ष

इस प्रकार से हम देखते है कि नलविलास नाटक की नायिका दमयन्ती, पतिव्रता, लज्जावान, धैर्यशालिनी, सूक्ष्मनिरीक्षण कुशला श्लिष्ट हास–परिहास में प्रवीण, संगीत प्रेमी, सदाचारी, शकुन में विश्वास करने वाली तथा बुद्धिमती, सुन्दरी नारी है। कवि श्री रामचन्द्रसूरि ने अपने इस नाटक में दमयन्ती के उदात्त स्वरूप को भली–भाँति चरितार्थ करने में पूर्णतः सफल हुए है।

सन्दर्भ

1. दशरूपकम्– टीकाकार– डॉ0 बैजनाथ पाण्डेय–2/1–2
2. दशरूपकम्– टीकाकार– डॉ0 बैजनाथ पाण्डेय–2/15
3. दशरूपकम्– टीकाकार– डॉ0 बैजनाथ पाण्डेय–2/15
4. नलविलास– टीकाकार– डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–159
5. नलविलास– टीकाकार– डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–6/9
6. नलविलास– टीकाकार– डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र– पृष्ठ–86–87
7. दशरूपकम–टीकाकार–बैजनाथ पाण्डेय–2/16
8. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–96
9. नवविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–3/31

10. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–22
11. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–1/16
12. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–97
13. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–57
14. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–153
15. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–191
16. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–98
17. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–93
18. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–143
19. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–90–91
20. नलविलास–टीकाकार–डॉ0 धीरेन्द्र मिश्र–पृष्ठ–82